Vol. 3, No. 2 (July 2014) P. 49-51 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

दूरस्थ संगीत शिक्षा की संभावनाएँ

कृतानन्द पाण्डेय
शोधार्थी, वाद्य–विभाग
संगीत एवं मंच कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
Email- kritanandpandey@gmail.com

शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में अभी तक प्रभावी शिक्षण के लिए वैयक्तिक शिक्षण शब्द ही प्रयुक्त होता था, जिसके तहत गुरू–शिष्य परपंरा पोषित होती थी। हजारों वर्षों से यही चला आ रहा है, लेकिन पिछले चार दशकों में जिस तरह सूचना–तकनीक और कम्प्यूटर का हर क्षेत्र में उपयोग बढ़ा है, उससे अब शिक्षण पद्धति में भी परिवर्तन आया है। विविध नवीन तकनीकी का इस्तेमाल कर अब शिक्षा सामान्य जन के लिए मुहैया कराने का प्रयास किया जा रहा है । इसी के लिए मुक्त विश्वविद्यालयों व इनके नवीन पाठ्यक्रमों का संचालन शुरू हुआ। संगीत के क्षेत्र में इसकी मांग को देखते हुए इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा–मण्डलों द्वारा कम्प्यूटर तथा सूचना तकनीक का उपयोग कर संगीत शिक्षण की भी दूरवर्ती प्रणाली शुरू करें । इससे लोग घर बैठे कम्प्यूटर के जरिए संगीत की शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे ।

संगीत में दूरस्थ शिक्षा के संस्थान अपने शिक्षार्थियों के साथ अनेक साधनों जैसे– मुद्रित सामग्री, रेडियों, दूरदर्शन, दृश्य, श्रव्य कैसेट, सी.डी., डी.वी.डी., टेलीफोन, मोबाइल, कम्प्यूटर, इण्टरनेट आदि के जरिए संपर्क कर सकते हैं एवं शिक्षण सामग्री उपलब्ध करा सकते हैं। संगीत में औपचारिक और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली सदियों से ही अभिजातमुखी भूमिका निभाती रही है। विभिन्न व्यवस्थाओं में लगे या जीवन के किसी चरण में शिक्षा से वंचित लोग अपनी पसंद की शिक्षा पाना जरूर चाहेंगे। इसलिए हमें विविध स्त्रोतों के उपयोग से संगीत के शैक्षिक अवसरों का समानीकरण सुनिश्चित करना होगा । दूरस्थ शिक्षा कम खर्चीली होगी, यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय दोनों दृष्टिकोणों में ठोस और असरदार होती है। संगीत की दूरस्थ शिक्षा परंपरागत शिक्षा से भिन्न प्रकार की होगी । इसमें शिक्षण विधियों की अपेक्षा संप्रेषण माध्यमों की प्रधानता रहेगी। जैसे– रेडियो, टी.व्ही, पत्र–पत्रिकाएँ आदि । इसमें छात्रों को अध्ययन में पूर्ण स्वतंत्रता होगी । संचार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हुई क्रांति ने दूरस्थ शिक्षा की व्यापकता और शक्ति को बढ़ाया है और पूरे विश्व में परम्परागत शिक्षण प्रणाली के एक समर्थ विकल्प के रूप में दूरस्थ शिक्षा ने अपने महत्व को प्राप्त कर लिया है । एक स्वतंत्र और प्रजातांत्रिक समाज के लिए यह आवश्यक है कि उसके अधिसंख्य लोगों को उच्च–शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए। टेक्नोलॉजी के विकास से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा पद्धति पर काफी असर पड़ा है। सीना–ब–सीना तालीम के वक्त शार्गिद को उस्ताद जो

सिखाते थे, उसे वहीं बैठकर याद करना पड़ता था, लेकिन मुद्रण के अनेक नवीन उपकरणों के आ जाने से एक ही बंदिश को कई–कई बार सुनना संभव हो गया है। जो संगीत पहले उस्तादों द्वारा या फिर विद्यालयों में सिखाया जाता रहा है, उसकी शिक्षा आज संगीत के विद्यार्थी को घर बैठे प्राप्त हो सकती है। विविध भारती से 'संगीत सरिता' का पाठ नियमित प्रसारित होता है और यह कार्यक्रम संगीत श्रोताओं में बहुत लोकप्रिय व लाभप्रद है।

संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मुख्य घटक इस प्रकार हो सकते हैः–

1. पत्राचार सामग्री ।
2. रेडियों और टेलीवीजन प्रसारण ।
3. सामूहिक प्रशिक्षण कार्यशाला ।
4. इण्टरनेट द्वारा यू–टूब एवं वीडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से ।

आचार्यों–प्राध्यापकों से विश्वविद्यालय स्तरीय पाठ तैयार कराकर दूरदर्शन के माध्यम से समय–समय पर उनकी प्रस्तुति में योगदान देना होगा ताकि विद्यार्थी लाभान्वित हो सके। अब तक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयोग व परीक्षण दूरस्थ शिक्षा पर हो चुके हैं। वर्तमान में विश्व के लगभग 60 देशों के विश्वविद्यालयों एवं इनमें अध्यनरत लाखों विद्यार्थियों ने नई तकनीक को दूरवर्ती शिक्षण के अनेक पाठ्यक्रमों में अपनाया हुआ है। वर्तमान में लगभग 10,000 कोर्स नई तकनीक के प्रयोग के आधार पर संचालित हो रहे हैं। फिनलैण्ड में दूरस्थ संगीत शिक्षा का नेटवर्क सफलतापूर्वक चल रहा है। भारत में चेन्नई विश्वविद्यालय सफलतापूर्वक 1944 ई. से संगीत में स्नातक पाठ्यक्रम पत्राचार प्रणाली के द्वारा अयोजित कर रहा है। इसी दिशा में वर्तमान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में भी संगीत के पाठ्यक्रम स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर प्रारंभ हो गए है।

संगीत की दूरवर्ती शिक्षा अपेक्षानुकृत छात्रानुकूल है। कक्षा–शिक्षण समयबद्ध होता है, जबकि दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षण अध्ययन अधिक आत्मनिर्धारित है, जो भिन्न–भिन्न वैयक्तिक किन्तु अधिक प्रभावी वातावरण में सम्पन्न हो सकती है। इसके लिए जरूरी है कि विश्वविद्यालय एवं संगीत अकादमी उत्कृष्ट ऑडियो, वीडियों के साथ कम्प्यूटर फ्लॉपी एवं वेबसाइट विद्यार्थियों को सुलभ करायें। भारतीय शास्त्रीय संगीत राग–रागनियों और ज्ञान की दृष्टि से समृद्ध है, जरूरत है इसे इसके व्यापक प्रचार–प्रसार की । इंटरनेट के माध्यम से हम भारतीय संगीत को देश के हर कोने के साथ–साथ विदेशों में भी लोकप्रिय बना सकते है और इसके माध्यम से हम घर बैठे दुनिया के किसी भी कलाकार का वीडियों रिकॉर्डिंग देख एवं सुन सकते है तथा इससे ज्ञान प्राप्त कर सकते है। भारतीय संगीत ने विकास का लम्बा सफर तय किया। गुरू–शिष्य परंपरा के बाद संस्थागत शिक्षा प्रणाली का व्यापक एवं उच्च स्तर पर

प्रचार–प्रसार हुआ, लेकिन आज जब जरूरते और स्थितियां बदल रही हैं, दूरियॉ घट रही हैं, तो ऐसे में दूरस्थ संगीत शिक्षा प्रणाली समाज की आवश्यकता है।

दूरस्थ शिक्षा में प्रयोग किए जाने वाले सभी नवीन तकनीकी माध्यम गुरू का स्थान तो नहीं ले सकते हैं परन्तु गुरू की अनुपस्थिति में उनके द्वारा दिये गई तालीम को इन माध्यमों की सहायता से हम अच्छे से अभ्यास कर सकते है। उदाहरण के लिए यदि किसी गुरू से कोई शिष्य कम से कम 5 वर्ष तक संगीत की तालीम अच्छे से लिया हो तो वह बाद में दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत इण्टरनेट द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से उनसे अपने तालीम को दूर रहकर भी नियमित रूप से जारी रख सकता है। इसमें उसकों कोई भी दिक्कत नहीं आयेगी। कहीं–कहीं पर तो बड़े प्रोजेक्टर के माध्यम से बड़े हॉल में ये कक्षाऍ आयोजित की जाती है जिससे समूह में विद्याार्थी संगीत का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकते हैं ।

आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक का प्रयोग शास्त्रीय संगीत के घरानों की विशेषताओं एवं बारीकियों को संग्रहीत करने में भी किया जा रहा है। इण्टरनेट जैसी तकनीक एक विश्वव्यापी संगीत का इतिहास संग्रहीत कर सकती है, साथ ही साथ संगीत दस्ताविजीकरण की सुविधा हमें उपलब्ध करा सकते हैं।

क्या दूरस्थ संगीत शिक्षा से गुरू–शिष्य परंपरा की विशुद्धता को कायम रखा जा सकेगा ? टेक्नोलॉजी के अधिक उपयोग से लक्ष्य से भटक जाने का संदेह हो सकता है। कुछ संगीतज्ञों का ये भी कहना है कि जहॉ–जहॉ संगीत की शिक्षा को आधुनिक शैक्षणिक पद्धति से दूर रखा गया, वहॉ संगीत की शिक्षा ज्यादा अच्छी तरह से विद्यार्थी ग्रहण कर रहे हैं।

दूरस्थ संगीत शिक्षा के अच्छे पहलुओं पर भी ध्यान देना चाहिए, साथ ही यह भी कोशिश की जानी चाहिए कि अगर इससे कोई नुकसान है, तो वह कितना है और उसे हम कैसे दूर कर सकते हैं। हमें आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते समय संगीत के लक्ष्य को ध्यान में रखना होगा। हमें तकनीक को संगीत पर हावी होने से रोकना होगा ।

संगीत के लक्ष्य और आधुनिक तकनीक के बीच समन्वय रखकर दूरस्थ संगीत शिक्षा से अनेकों लाभ होंगे। दूरस्थ संगीत शिक्षा से सीना–ब–सीना तालीम की परंपरा समाप्त नहीं होगी, वरन् आने वाले समय में यह शिक्षा गुरूओं के लिए ऐसा उपकरण बनेगी, जिसके माध्यम से वे अपनी पहुॅच से बहुत आगे तक बढ़कर शिष्यों को लाभान्वित करेंगे। भारतीय संगीत के बहुत से गुरू दूरस्थ संगीत शिक्षा के माध्यम से भारत में तथा साथ ही साथ विदेशों में बैठे अपने शिष्यों को संगीत की तालीम देते हैं। भविष्य में संगीत की शिक्षा को दूरस्थ संगीत शिक्षा से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता है । यह आने वाले समय की प्रबल मॉग है ।